इकाई 4 खेल और बच्चे

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देष्य

4.3 खेल क्या है?

4.4 खेलों के प्रकार

4.5 लड़कों के लिए "बंदूक" और लड़कियों के लिए "गुड्डे–गुड़िया" – क्या सिर्फ ऐसा ही होना चाहिए?

4.5.1 खेल में लैंगिक विषमताएँ

4.5.2 वंचित वर्गों के बच्चों के लिए खेल

4.6 विकास के लिए खेलकूद

4.6.1 शारीरिक एवं पेषीय गति विकास

4.6.2 भाषा विकास

4.6.3 संज्ञानात्मक विकास

4.6.4 सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास

4.6.5 सर्जनात्मक एवं कल्पनात्मक शक्ति का विकास

4.7 खेलकूद व अन्य क्रियाकलाप

4.8 खेल में अध्यापक की भूमिका

4.9 मूलभूत सिद्धांत

4.9.1 बच्चों के साथ जोषीला एवं मित्रवत संबंध विकसित करना

4.9.2 बच्चों को स्वीकार करना

4.9.3 स्वतंत्रता का वातावरण स्थापित करना

4.9.4 भावनाओं की पहचान एवं अभिव्यक्ति

4.9.5 बच्चे का आदर सुनिष्चित करना

4.9.6 बच्चे अपना रास्ता स्वयं चुनते हैं

4.9.7 जल्दबाजी नहीं करें

4.9.8 सीमाओं का निर्धारण

4.10 माता–पिता को शामिल करना

4.11 काम ही कामः खेल का नहीं नामो–निषान

4.12 खेलकूदः आनंद का विषय

4.13 सारांष

4.14 इकाई के अंत में अभ्यास

4.15 बोध प्रष्नों के उत्तर

4.16 पठनीय सामग्री

4.1 प्रस्तावना

खेल शब्द से हम सभी अच्छी तरह परिचित हैं। यह अत्यंत व्यापक अर्थों में प्रयोग होने वाला शब्द है जिसमें अनेक प्रकार के व्यवहार और क्रियाकलाप शामिल होते हैं। अभी तक हममें से अधिकांष लोग "खेल" शब्द का प्रयोग अत्यंत सीमित अर्थों में करते रहे हैं। हम, आमतौर पर, बच्चे के "खेलने" का संबंध उसके शारीरिक विकास और कभी–कभी सामाजिक विकास से मानते हैं। खेलकूद को हमने एक ऐसी चीज माना हुआ है जो आसपास की वस्तुओं के बारे में बच्चे की सीखने की प्रक्रिया से अलग है और उसे अलग ही रखा जाना चाहिए। बच्चे के विकास में खेलकूद की वास्तविक भूमिका क्या है? क्या हम लोग माता–पिता या अध्यापक होने के नाते खेलकूद को थोड़ा–सा भी महत्व दे पाते हैं?

इस इकाई में हम इस बात का पता लगाएँगे कि खेलकूद किस प्रकार बच्चे के बहुमुखी विकास की गति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं; तथा खेलकूद के अभाव की स्थिति बच्चे के विकास पर किस प्रकार का प्रभाव डालती हैं। साथ ही आप एक वयस्क के रूप में "षिक्षा ग्रहण" को सरल–सुग्राह्य बनाने के लिए खेलकूद का किस प्रकार प्रभावी ढंग से प्रयोग कर सकते हैं।

4.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपः

- खेलकूद और उनसे संबंधित क्रियाकलापों की विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के खेलों की सूची तैयार कर सकेंगे;
- बच्चों की आयु के अनुसार विभिन्न प्रकार के खेलों का चयन कर सकेंगे;
- लड़के और लड़कियों दोनों को ही समान रूप से विभिन्न प्रकार के खेलकूद के अवसर उपलब्ध कराने की आवष्यकता को समझ सकेंगे;
- बच्चे के शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषिक और सामाजिक–संवेगात्मक विकास की गति को बढ़ाने में खेलों के महत्व को पहचान सकेंगे;
- अध्यापकों तथा माता–पिता की खेलों में भूमिका पहचान सकेंगे;
- "न खेल पाने" के कारण बच्चों पर होने वाले दुश्प्रभावों का पता लगा सकेंगे; और
- बच्चों की आवष्यकताओं और विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त क्रियाकलापों की योजना बना सकेंगे और उनमें सुधार कर सकेंगे।

4.3 खेल क्या है?

हममें से अधिकांष लोग "खेलकूद" के बारे में पूछते ही तुरंत "खेलकूद" के बहुत से उदाहरण दे डालेंगेः जैसे कि गुड्डे–गुड़ियाओं से खेलना, झूला झूलना, लुकाछिपी खेलना, बैट बाल, दौड़ना, शंतरज खेलना, अरविंद झूल रहा है; राधिका डाक्टर का अभिनय कर रही है, आदि।

आइए, कुछ और बच्चों से संबंधित मामलों पर विचार करें। श्याम को गणितीय पहेलियाँ हल करना अच्छा लगता है; रेषमा को पुस्तकें पढ़ने में आनंद आता है; अथवा बिट्टू जब

पढ़ते–पढ़ते ऊब जाता है तो घर के कामों में अपनी माँ का हाथ बँटाना पसंद करता है। क्या हम इन सभी क्रियाकलापों को "खेलकूद" की संज्ञा दे सकते हैं? जी हाँ, जब तक इन क्रियाकलापों में बच्चों को आनंद आता है – ये क्रियाएँ "खेलकूद" कही जा सकती हैं। बढ़ई द्वारा अलमारी बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला हथौड़ा उसके बच्चों के लिए खिलौने की तरह हो सकता है। गृहणी के लिए रोटी बनाना एक श्रम साध्य और थकाऊ घरेलू कामकाज की तरह है लेकिन एक छोटी लड़की के लिए यह कार्य खेल की तरह हो सकता है। किसी अक्षर विशेष से शुरु होने वाले एक शब्दों के बारे में विचार करना बच्चे के लिए बड़ा ही नीरस और उबाऊ कार्य है लेकिन जब इसी काम को अंत्याक्षरी या "वर्डगेम" की तरह किया जाता है तो बड़ी आसानी से यह एक मज़ेदार खेल का रूप ले लेता है।

हास्य विनोद और प्रसन्नता खेल की आवष्यक विशेषताएँ हैं। खेल इसलिए खेले जाते हैं क्योंकि इससे आनंद मिलता है। खेलकूद में अंतिम परिणाम या उपलब्धि का उतना महत्व नहीं है जितना कि खेल के दौरान मिलने वाले आनंद का। बढ़ई जिस हथौड़े की अलमारी बनाने के लिए प्रयोग में लाता है, उसके बेटे के हाथ में जाकर वहीं हथौड़ा एक खिलौना बन जाता है, क्यों? क्योंकि बढ़ई की रुचि हथौड़ा चलाने में न होकर, हथौड़ा चलाने से बनने वाले अंतिम उत्पाद में अधिक है। वह मजे के लिए हथौड़ा नहीं चलाता बल्कि अलमारी बनाने के लिए चलाता है ताकि अलमारी बनाकर वह अपनी जीविका चला सके। जबकि उसके बेटे को अलमारी आदि के निर्माण से कुछ लेना देना नहीं है। उसे हथौड़ा चलाने की प्रक्रिया में आनंद का अनुभव होता है। बच्चे का हथौड़ा चलाना आनंदानुभूति के लिए है। इसी तरह एक गृहणी के लिए चपाती बनाना घर के आवष्यक कार्यों में से एक है। जबकि एक लड़की के लिए यह खेल भर है। लड़की के लिए इस बात का कोई महत्व नहीं है कि वह किस प्रकार की चपाती बनाती है; बना पाती भी है कि नहीं। वह सिर्फ चपाती बनाने की प्रक्रिया में मजा लेती है। एक बार जब बच्चा ऐसे किसी क्रियाकलाप से ऊब जाता है तो वह उस काम को करना बंद कर देता है और किसी दूसरे काम में अपना ध्यान केन्द्रित कर देता है। क्योंकि उसकी रुचि उस कार्य के उत्पादन और भविश्य में उस कार्य से होने वाली उपलब्धि से नहीं होती; उदाहरण के लिए, लड़की जब चाहे चपाती बनाना बंद कर सकती है क्योंकि चपाती बनाना उसके अपने मजे के लिए है। लेकिन उसकी माँ ऐसा नहीं कर सकती है क्योंकि उसके लिए चपाती बनाने का उद्देष्य घर के सभी सदस्यों के लिए भोजन की व्यवस्था करना होता है।

किसी क्रिया विशेष को "खेल" माना जा सकता है अथवा नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह क्रिया बच्चा स्वेच्छा से कर रहा है अथवा वैसा करने के लिए उसे विवष किया जा रहा है। यदि कोई बच्चा इसलिए किसी पहेली को हल करने में लगा है क्योंकि उसके अध्यापक ने उसे ऐसा करने को कहा है तो उसे खेल की संज्ञा नहीं दी जाएगी जबकि स्वेच्छा से पहेली हल करना "खेल" कहलाएगा।

किसी कार्य को करने में खतरा अथवा असफल होने का भय कितना है, यह भी इस बात का निर्धारण करता है कि क्रिया विशेष खेल है अथवा नहीं। अंतिम परीक्षा के लिए अध्ययन करना खेल नहीं कहलाएगा क्योंकि इसमें परीक्षा में अच्छे अंकों से (उत्तीर्ण) होने की माँग निहित होती है। लेकिन किसी पहेली को हल करने में असफल रहने (किसी पहले को हल न कर पाने) या शतरंज के खेल में अपने प्रतिद्वंद्वी को "मात" देने की आवष्यकता तुलनात्मक रूप से कम महत्व रखती है क्योंकि ये क्रियाएँ खेल कहलाती हैं। स्पष्ट है कि **किसी क्रिया विशेष के प्रति बच्चे का दृष्टिकोण तथा उसे करने का उद्देष्य ही यह निर्धारित करेगा कि वह क्रिया खेल है अथवा कार्य।**

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) "कोई क्रियाकलाप खेल है अथवा नहीं" इसका निर्धारण करने के लिए आप निम्नलिखित में किस मापदंड को अपनाएँगेः

i) आनंदानुभूति

ii) शारीरिक क्रियाएँ

iii) दीर्घकालिक परिणाम

iv) कल्पना

v) अन्य बच्चों के साथ अंतःक्रिया

vi) स्वेच्छा

2) निम्नलिखित में से कौन–कौन सी क्रियाओं को आप "खेलों" के अंतर्गत रखना चाहेंगे – प्रत्येक क्रिया के लिए एक कारण देते हुए अपने वर्गीकरण का औचित्य बताइएः

i) आठ वर्ष के बच्चे विद्यालय परिसर में स्थित पेड़ पर चढ़ने और एक दूसरे का पीछा करने में व्यस्त हैं।

....

....

....

....

....

....

....

ii) दस वर्षीय बच्चे से शब्दों के भावानुरूप हाव–भाव प्रदर्षित करते हुए कविता–पाठ के लिए कहा गया है।

....

....

....

....

....

....

....

4.4 खेलों के प्रकार

आइए, अब हम इस बात को समझने का प्रयास करें कि बच्चे कैसे खेलते हैं। नीचे दी गई स्थितियों पर विचार कीजिएः

i) श्रीमती शर्मा ने अपने (आठ वर्षीय) बेटे से कहा – "ऋषि", मुझे शाम को बाजार जाना है क्यों न तुम आज घर पर ही रहो और अपनी बहन अनु (तीन वर्षीय) के साथ खेलो। अन्यथा वह बिल्कुल अकेली रह जाएगी।

   "नहीं मम्मी नहीं।" ऋषि ने कहा! "मुझे अपने दोस्तों के साथ जाकर खेलना है। मुझे आज राकेष से अपने कंचे (काँच की गोलियाँ) जीतकर लाने हैं, और फिर अनु तो मेरे साथ कभी भी खेलती नहीं है। वह तो अपनी गुड़िया के साथ खेलती रहती है और खाने के लिए मुझे काल्पनिक वस्तुएँ देती रहती है। आप उसे अपने साथ ही बाजार ले जाइए।"

   आपके मन में यह विचार क्यों आया कि ऋषि सिर्फ अपने मित्रों के साथ ही खेलेगा और अनु उसे अपने खेल में शामिल नहीं करेगी? आपमें से कई लोग कहेंगे कि दोनों की आयु में जो अंतर है, वही इसका कारण है जी हाँ, आप बिल्कुल ठीक समझ रहे हैं; ऋषि की आयु आठ वर्ष है जबकि उसकी छोटी बहन अनु सिर्फ तीन वर्ष की है। दोनों के साथ न खेलने की यही वजह हो सकती है।

   आइए, अतः नीचे दी गई स्थिति पर विचार करते हैंः

ii) अपनी साढ़े चार वर्ष की बेटी राधा के चिल्लाने की आवाज सुनकर और उसे अपनी ओर भागते हुए आती देखकर श्रीमती मल्होत्रा बुनाई बंदकर देती हैं। "राधा, क्या हुआ? तुम चिल्ला क्यों रही हों?" उन्होंने पूछा। राधा ने सुबंकते हुए बताया – "मम्मी, अनु (3 वर्षीय) मुझे अपनी साइकिल पर नहीं बिठा रही।" – "कोई बात नहीं" श्रीमती मल्होत्रा ने कहा – "तुम जाकर लक्ष्मी के साथ खेलो"। राधा ने अपनी गुड़िया और खेलने के बर्तन उठाए और अपनी दो वर्षीय बहन लक्ष्मी से बातें करते हुए प्रसन्नतापूर्वक झूठ–मूठ के चाय–पकोड़े बनाने प्रारंभ किए। अचानक उसने देखा कि लक्ष्मी का ध्यान उसकी तरफ नहीं था। वह बर्तनों को ऊपर नीचे रखने में व्यस्त थी।

आपके विचार में अनु ने राधा को अपनी साइकिल पर क्यों नहीं बिठाया? लक्ष्मी ने राधा के खेल में रुचि लेने की बजाय अपने आप ही खेलना क्यों शुरु कर दिया? पहले उदाहरण की तरह यहाँ भी इसका कारण उनकी आयु से संबंधित है। बच्चे को किस प्रकार के खेल में आनंद आएगा – यह उसकी आयु पर निर्भर करता है। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है उसे भिन्न–भिन्न प्रकार के खेल अच्छे लगने लगते हैं। अब आपके मन में अवष्य यह प्रष्न उठ रहा होगा कि विभिन्न आयु स्तरों पर बच्चों को अच्छे लगने वाले खेलों के विभिन्न प्रकार कौन–कौन से हैं?

शैशवावस्था के दौरान, लगभग 2 वर्ष की आयु तक, बच्चा अकेला खेलना पसंद करता है। खेलते समय वह इस बात की कोई परवाह नहीं करता कि उसके आसपास दूसरे लोग क्या कर रहे हैं? इस आयु के बच्चों के खेल की विशेषता यह होती है कि वह बेहद सरल किस्म की शारीरिक क्रियाओं को बार–बार दोहराता रहता है। यही वजह है कि लक्ष्मी अपनी बहन राधा के क्रियाकलापों पर ध्यान देने की बजाय अपने आप खेलना शुरु कर देती हैं एक षिषु लगातार अपना झुनझुना बजा रहा है; दूसरा बच्चा मिट्टी के खिलौने बनाते हुए खेल रहा है जबकि उसी के पास बैठा एक और बच्चा "ब्लॉक्स" वाले खेल खेल रहा है, ये सभी अकेले–अकेले खेले जाने वाले खेलों "**एकल खेलों**" के उदाहरण हैं।

दो से साढ़े तीन वर्ष की आयु का बच्चा दूसरे बच्चों के साथ बिठाकर बिना अधिक अंतःक्रिया (बातचीत) के ही पहले स्वतंत्र रूप से खेलना शुरु करता है। इस प्रकार के खेल **समानान्तर खेल** कहलाते हैं। साढ़े तीन से चार साल तक की आयु का बच्चा अपने खिलौने आदि से दूसरे बच्चों के साथ मिल–जुलकर खेलना सीख जाता है। इस अवस्था में बच्चा खिलौने आदि विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री से खेलना पसंद करता है। इस प्रकार के खेल **साहचर्यात्मक खेल** कहलाते हैं।

चित्र 4.1: एकल खेल

तीन वर्षीय अनु हालाँकि राधा के साथ खेलना पसंद करती है पर खेलने के लिए उसे अपनी साइकिल नहीं देना चाहती। जबकि साढ़े चार साल की राधा अपनी बहन लक्ष्मी के साथ अपने खिलौने बाँटकर खेलना पसंद करती है और साथ ही वह अनु के साथ उसकी साइकिल से भी खेलना चाहती है।

चित्र 4.2: समानान्तर खेल

जब बच्चे चार – साढ़े चार वर्ष के हो जाते हैं तो वे दूसरों के साथ सहयोग करते हुए खेलना पसंद करते हैं। उनके खेल संगठित सुनियोजित होते हैं और खेल में हर बच्चा अपनी एक विशिष्ट भूमिका निभाता है। उदाहरणार्थ "घर–घर" खेलते समय "मम्मी–पापा" की भूमिका निभाते हैं; या झूला–झूलते समय एक–दूसरे के साथ सहयोग करते हुए एक–दूसरे को झुलाते हैं; ऐसे में "झूलने वाले" और "झुलाने वाले" की अलग–अलग भूमिका भी निभा रहे होते हैं। इस प्रकार के खेल **सहयोगात्मक खेल** कहलाते हैं।

चित्र 4.3: साहचर्यात्मक खेल

लगभग सात वर्ष की आयु तक के बच्चों को **काल्पनिक खेल** खेलना अच्छा लगने लगता है। इस प्रकार के खेलों में वह विभिन्न स्थितियों और घटनाओं में तरह–तरह की भूमिकाएँ लेते हुए अभिनय करता है। इस आयु वर्ग के बच्चों को अक्सर आप "घर–घर", "षिक्षक–षिक्षार्थी", "डाक्टर–मरीज", आदि खेलते हुए देख सकते हैं। इन खेलों में वे "माता–पिता", "बच्चे", "षिक्षक", "डाक्टर", "मरीज", आदि बने होते हैं।

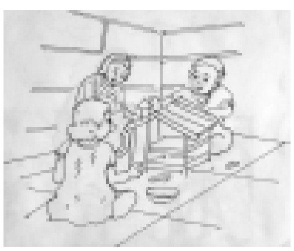

चित्र 4.4: सहयोगात्मक खेल

सात वर्ष की आयु के बाद "नियमानुसार खेल" खेलने का दौर शुरु होता है। इस आयु के बच्चों को खेल के नियमों का पालन करते हुए खेलना अच्छा लगता है। खेल में विभिन्न कौषलों का प्रदर्षन करना, जैसे कि "गति नियंत्रण", "लक्ष्य भेदना" आदि बच्चे के खेल का महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। इन कौषलों के प्रदर्षन में बच्चे एक–दूसरे को पीछे छोड़ देना चाहते हैं और उनमें एक तरह की प्रतियोगिता की भावना का विकास होता है। इस स्थिति में ऋषि अपने मित्रों से अपने कंचे वापस जीत लेने के लिए कटिबद्ध है यहाँ वह राकेष को हरा चाहता है ताकि यह सिद्ध कौषल और योग्यताएँ समवयस्कीय साथियों द्वारा बच्चे को स्वीकार किए जाने के लिए महत्वपूर्ण मापदंड की तरह होते हैं।

चित्र 4.5: काल्पनिक खेल

इन अवस्थाओं में **थोड़ा–बहुत लचीलापन** हो सकता है। ऐसा नहीं है कि साढ़े तीन या चार वर्ष की लड़की एकदम से केवल साहयर्चात्मक खेल शुरु कर देती है। वह इन्हें इसकी उम्र से कुछ समय पहले या कुछ और बड़ी होने पर भी शुरु कर सकती है। यह संधिकाल की स्थिति है जब धीरे–धीरे साहयर्चात्मक खेल समानान्तर खेलों का स्थान ले लेते हैं। इसी तरह दूसरी प्रकार के खेलों में भी संधिकाल की स्थिति आती है जब धीरे–धीरे एक प्रकार के खेलों का स्थान दूसरे प्रकार के खेल ले लेते हैं।

चित्र 4.6: नियमानुसार खेल

इसी के साथ किसी आयु विशेष में ऊपर बताए गए विभिन्न प्रकार के खेल एक–दूसरे के साथ भी देखे जा सकते हैं। जैसे कि एक बड़ा बच्चा "पहले हल करो" जैसे अकेले खेले जाने वाले खेल खेल रहा हो तो उसे अपरिपक्व के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए क्योंकि यह स्वतंत्र रूप से खेले जाने वाला लक्ष्य आधारित खेल है।

जैसे–जैसे बच्चे की आयु बढ़ती है, उसके खेलों में सूक्ष्म पेषीय कौषलों का प्रयोग बढ़ता जाता है। अब बच्चा "मैकेनो" (खिलौने निर्माण सामग्री जिसके कई छोटे–छोटे भाग होते हैं) कढ़ाई, बुनाई, पहेलियों आदि जैसे खेलों का आनंद लेता है। इसका कारण अति उत्कृष्ट पेषीय कौषलों का विकास होता है। छोटा बच्चा जिसके सूक्ष्म पेषीय कौषल ठीक से विकसित नहीं हुए हैं, उदाहरण के लिए एक चार वर्ष का बच्चा किसी भी क्रिया को करते समय अपनी खेल क्रियाएँ पसंद करेगा, जिनमें उसके संपूर्ण शरीर का प्रयोग होता हो जबकि थोड़ी बड़ी आयु के बच्चों को ऐसा करने की आवष्यकता नहीं होती। जिसमें संपूर्ण शरीर की भागीदारी हो जैसे दौड़ना, उछलकूद करना, झूला–झूलना आदि। बच्चे जब छोटे होते हैं तब भी उन्हें खेलने के लिए मूर्त वस्तुओं और खेल सामग्री की आवष्यकता होती है। खेलते समय दूसरे बच्चों से बातें करने (अंतःक्रिया करने) की आवष्यकता भी उन्हें पड़ती है। जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं, वे ज्यादा अमूर्त रूप से चिंतन कर सकते हैं। **ऐसी स्थिति में उन्हें खेल के दौरान बातचीत करने के लिए किसी वास्तविक व्यक्ति या बच्चे की आवष्यकता नहीं होती। वे उन पात्रों या आकृतियों से अंतःक्रिया करते हैं जिन्हें उन्होंने कॉमिक्सों और पुस्तकों में पढ़ा हो या टेलीविजन में देखा हो।**

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3) आपके विचार में नीचे दिए गए विकल्प/विकल्पों में से कौन–सी विशेषताएँ किस प्रकार के खेल की हैंः

i) समानान्तर खेल

क) बिना यह देखे कि सामने वाला बच्चा क्या कर रहा है, दो बच्चे एक साथ आमने–सामने खेल रहे हैं।

....

ख) एक–दूसरे से थोड़ी बातचीत करते हुए खेल रहे हैं।

....

ग) बच्चे संगठित (सुनियोजित) खेल खेल रहे हैं जिसमें प्रत्येक बच्चे की कोई न कोई भूमिका है।

....

ii) साहचर्यात्मक खेल

क) बच्चे स्वतंत्र रूप से एक ही खेल खेल रहे हैं।

....

ख) बच्चे बहुत ही कम बातचीत (अंतःक्रिया) करते हुए खेल रहे हैं।

....

ग) खेलते समय बच्चे एक–दूसरे के साथ बातचीत (अंतःक्रिया) कर रहे हैं, साथ–ही साथ दूसरे के खिलौनों का प्रयोग कर रहे हैं।

....

4) अपनी दो वर्षीय बेटी उमा के बारे में श्रीमती शर्मा काफी चिंतित हैं। वह कहती हैं कि उमा दूसरे बच्चों के साथ नहीं खेलती। क्या उमा के खेल में भाग न लेने को लेकर उनका चिंतित होना ठीक है? अपने उत्तर के लिए, समुचित कारण दीजिए।

....

....

....

....

....

5) बताइए, निम्नलिखित स्थितियों में किस प्रकार के खेल (एकल, समानान्तर या सहयोगात्मक) उचित हैं।

i) छः माह की लड़की रीना अपने पालने में लेटी हुई है और पालने से लटके घुँघरूओं को अपने नन्हें–नन्हें पैरों से हिलाती है।

....

....

....

....

....

ii) चार वर्षीय प्रीति और रामू एक–दूसरे का हाथ पकड़ कर एक–एक सीढ़ी छोड़कर कूद–कूद कर नीचे आ रहे हैं। जेसे ही वे सबसे नीचे की सीढ़ी पर पहुँचते हैं, वे जोर से हँसते हैं और फिर से ऊपर भाग जाते हैं।

....

....

....

....

....

iii) दो वर्षीय शान्ता कमरे के एक कोने में "ब्लॉक्स" से खेल रही है। ढ़ाई वर्ष का पंकज अपनी कार वहाँ लाता है और कार को आगे पीछे खिसकाकर खेल रहा है और घुर्र की आवाज भी निकाल रहा है।

....

....

....

....

4.5 लड़कों के लिए "बंदूक" और लड़कियों के लिए "गुड्डे–गुड़िया" – क्या सिर्फ ऐसा ही होना चाहिए?

संभवतः आपने देखा होगा कि लड़के और लड़कियाँ अलग–अलग प्रकार के खेल खेलते हैं। "घर–घर", "गुड़िया से खेलना", "रस्सी कूदना", "गिट्टे" आदि कुछ खेल लड़कियाँ अधिक खेलती हैं। इस तरफ फुटबाल, क्रिकेट, कंचे खेलना, गुल्ली–डंडा आदि खेल आमतौर पर लड़कों द्वारा खेले जाते हैं। काफी छोटी आयु के बच्चों के खेलों में इस प्रकार के लिंग आधारित अंतर देखे जा सकते हैं।

आपके विचार में खेलों में इस तरह के लैंगिक प्रभेद के क्या कारण हो सकते हैं? क्या ये विभिन्नताएँ जन्मजात हैं तथा बच्चों के पैदा होते ही उपस्थित हो जाती हैं? या ये किसी प्रकार की षिक्षा का परिणाम हैं? आइए, नीचे दी गई स्थिति पर विचार करें।

"मम्मी मुझे भी अमित जैसी बंदूक चाहिए", ज्योति ने कहा। "बंदूक से तो लड़के खेलते हैं, तुम बंदूक का क्या करोगी?" ज्योति की माँ ने कहा। "मैं तुम्हें एक प्यारी सी गुड़िया ला दूँगी।"

श्रीमान वर्माजी अपने बेटे राजू के बारे में काफी चिंतित हैं क्योंकि वह अपने दोस्तों और अपनी बहन के साथ "घर–घर" खेलना पसंद करता है। राजू के लिए श्रीमान वर्माजी एक नई बंदूक, एक खिलौना कार और मैकेनो का सेट ले आए लेकिन राजू इन सबसे थोड़ी देर खेलने के बाद ही फिर से घर परिवार अथवा अध्यापक–विद्यार्थी खेलने के लिए अपनी बहन को बुला लेता है।

4.5.1 खेल में लैंगिक विषमताएँ

माता–पिता या अध्यापक के रूप में हम लोग इस प्रकार के खेल संबंधी व्यवहारों को यह सोचकर प्रोत्साहित करते हैं कि इस तरह से बच्चे इन लैंगिक व्यवहारों को सीख सकते हैं या कि आत्मसात् कर सकते हैं। इसी वजह से लड़कियों को गुड़िया, बर्तन के खिलौनों तथा दूसरे प्रकार के घर में खेले जा सकने वाले खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैं जब लड़कों को कंचे खेलना, खिलौना कार से खेलना तथा अन्य घर से बाहर जाने वाले ऐसे खेलों के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिनमें अधिक शारीरिक श्रम, दौड़ धूप, आक्रामकता और प्रतियोगिता की आवष्यकता होती है। यहाँ तक कि षिषुओं को भी हम उनके लिंग का विचार करते हुए उपयुक्त लगने वाले खिलौने ही खेलने के लिए देते हैं। जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं – हम इस प्रकार के विभाजन पर अधिकाधिक जोर देने लगते हैं। किन्तु माता–पिता द्वारा प्रदर्षित लिंग आधारित व्यवहार भिन्न हैं। उदाहरण के लिए, यदि पिता खाना बनाने या दूसरे घरेलू कार्यों में मदद करता है तो संभवतः लड़कों को घर–घर खेलने से नहीं रोका जाएगा। ऐसे पिता इस प्रकार की खेल क्रियाओं को लड़कों से अपेक्षित लिंग आधारित भूमिका का अंग मानेगा। दूसरी ओर, ऐसा बच्चा जो केवल अपनी माँ को ही घर का कामकाज करते हुए देखता है वह "घर–घर" जैसे खेल खेलना लड़कियों का काम मानेगा। इन सबका परिणाम यह होता है कि लगभग पाँच वर्ष की आयु तक होने पर बच्चा स्वयं ही दूसरे लिंग के लिए निर्धारित खेल खेलने में शर्म महसूस करने लगता है। **इस आयु में सहपाठी बच्चे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।** स्टापू या बट्टी (होपस्कॉच) खेलना पसंद करने वाले लड़के और लड़कों के साथ कंचे खेलने वाली लड़की का दूसरे समवयस्क साथियों/सहपाठियों द्वारा मजाक उड़ाया जाता है।

बच्चों के लिए उपर्युक्त माने गए लिंग आधारित खेल खेलने की अपेक्षा करना और ऐसा करने के लिए दबाव डालना उनके व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन के लिए हानिकारक हो सकता है। बच्चों को उनकी इच्छानुसार खेलने से रोक दिया जाता है और ऐसे ढंग से खेलने के लिए दबाव डाला जाता है जिससे उनकी खेल संबंधी आवष्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती। यदि उनकी रुचि उपयुक्त लैंगिक प्रकार के खेलों में नहीं है अथवा उनमें वैसी वरीयता ही नहीं है तो उनके खेल कौषल अपने समवयस्कों की तुलना मे बहुत निम्न स्तर के होंगे और ऐसी स्थिति में उनमें अपर्याप्त और हीनता की भावना विकसित होगी। लड़के और लड़कियों में आपस में भी अत्यधिक अन्तर होता है। जिन भी क्रियाकलापों में वे व्यस्त होते हैं वे उनके व्यवहार और माँसपेषियों के विकास में सहायक होती हैं।

यह सत्य है कि लड़कियाँ सिलाई–बुनाई, कढ़ाई, पहेली हल करना, मिट्टी से खेलना आदि क्रियाएँ करने में अधिक कुषल होती हैं क्योंकि लड़कों की तुलना में सामान्यतः लड़किया के "सूक्ष्म पेषीय कौषल" अधिक विकसित होते हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि लड़कें, लड़किया की तुलना में अधिक तेज दौड़ सकते हैं, अधिक ऊँचा कूद सकते हैं, अधिक तेज गति से साइकिल चलाने आदि में समर्थ होते हैं। इसका कारण यह होता है कि लड़किया की अपेक्षा लड़कों की हड्डियाँ और माँसपेषियाँ अधिक शक्तिषाली और अधिक अच्छे ढंग से विकसित होती हैं अतः वे कुल मिलाकर पेषीय क्रियाओं में अधिक श्रेष्ठ प्रदर्षन करते हैं। फिर भी वह अधिक महत्वपूर्ण है कि लड़के और लड़कियाँ दोनों को ही हमें विभिन्न प्रकार के खेल खेलने के अवसर प्रदान करने चाहिए ताकि वे अपनी स्वयं की योग्यता और इच्छा के अनुसार विकास कर सकें।

4.5.2 वंचित वर्गों के बच्चों के लिए खेल

झुग्गी या गाँव के एक गरीब परिवार के उस बच्चे को कैसा लगता होगा जिसके पास खेलने के लिए कोई खिलौना, उपकरण या अन्य सामग्री नहीं होती? क्या ये बच्चे खेलते नहीं या विकसित नहीं होते? इसका उत्तर है कि ये बच्चे भी जरूर खेलते हैं। वे अपने आसपास के वातावरण में उपलब्ध वस्तुओं/सामग्री से अपने खेल के उपकरण स्वयं बना लेते हैं। क्या आपने बच्चों को स्कूटर का पुराना टायर दौड़ाते या कार्ड के डिब्बे को धागे से खींचते हुए देखा? अनुभव लगभग एक जैसा ही होता है, जैसा एक मध्यम या उच्च मध्यम वर्ग का बच्चा हाथ में बना खिलौना खींचता है। वैसे ही क्या हमने कभी दो लकड़ी के टुकड़ों से बने साधारण वाद्य यंत्र को बजाकर रेल में मधुर गीत गाने वाले बच्चे नहीं देखे? क्या हमने कभी सड़क के किनारे पत्थरों और पुरानी रस्सी कूदते बच्चे नहीं देखें? यहाँ ये बच्चे तो श्रेष्ठ सुधारक हैं और साधारण और सस्ती वस्तुओं से अपने खेल के तरीके और सामान बना लेते हैं। अतः वंचित वर्ग के बच्चे भी खेल के अवसरों से नहीं चूकते हैं।

4.6 विकास के लिए खेलकूद

"षाम के साढ़े पाँच बजे थे। कक्षा आठ में पढ़ने वाले गुरदीप ने दोपहर बाद का सारा समय अपना गृहकार्य करने में बिताया था और अब वह अंधेरा होने से पहले कुछ देर खेलना चाहता था। उसने अपना बल्ला उठाया और अपनी माँ से बोला – "मम्मी, मैं कुछ देर के लिए खेलने जा रहा हूँ।" "क्या तुमने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया है।" माँ ने पूछा। "हाँ, मम्मी कर लिया।" गुरदीप ने कहा। "तो अभी थोड़ी देर और बैठकर पढ़ों। तुम्हें पता है, जल्दी ही तुम्हारी मासिक परीक्षा होगी और उसमें केवल गृहकार्य पूरा करने से ही तुम्हारे अच्छे अंक नहीं आ सकते।"

"लेकिन मम्मी मैं सिर्फ आधे घंटे खेलूँगा, उसके बाद वापस आ जाऊँगा।"

"नहीं, तुम रोजाना यही कहते हो। बाद में तुम्हें खेलने के लिए खूब समय मिलेगा।" और इसके बाद गुरदीप डबडबाई आँखों से बैठ जाता है और पढ़ने के लिए अपनी किताबें पलटने लगता है।

क्या आप गुरदीप की माँ के निर्णय से सहमत होंगे? बच्चे के विकास में खेलकूद की क्या भूमिका होती है? क्या यह सामान्य सी बात है कि गुरदीप की माँ, उसे रोजाना आधे घंटे के लिए भी खेलने की अनुमति नहीं दे सकती?

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

6) आपके विचार में एक बच्चे के विकास के लिए खेल का क्या महत्व हो सकता है? एक सूची बनाइए।

....

....

....

....

4.6.1 शारीरिक एवं पेषीय गति विकास

बच्चे के **शारीरिक विकास** के लिए शारीरिक खेल आवष्यक हैं। इस प्रकार के खेलों से बच्चे की माँसपेषियाँ विकसित एवं मजबूत होती हैं। साथ ही शरीर के सभी अंगों का व्यायाम भी हो जाता है। खेलने से खूब भूख लगती है और अच्छी नींद आती है। खेलकूद में भाग लेने से बच्चा अपनी विभिन्न शारीरिक क्रियाओं जैसे – दौड़ना, ऊँची कूद, लम्बी कूद, साइकिल चलाना, पेड़ पर चढ़ना आदि पर नियंत्रण रखना सीख जाता है, अर्थात इस प्रकार के खेल बृहत पेषीय कौषलों के विकास में सहायक होते हैं।

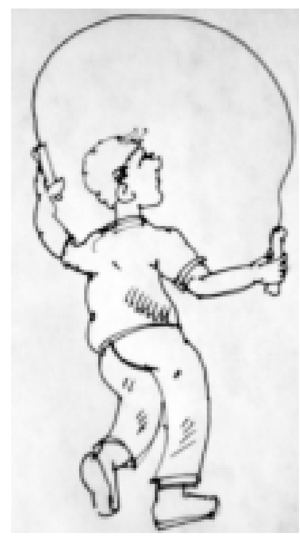

चित्र 4.7: रस्सी कूदना

खेल सूक्ष्म **पेषीय कौषलों** के विकास में भी सहायता करते हैं। प्राथमिक विद्यालय में पढ़ते समय बच्चे साइकिल चलाना, स्टापू (हॉपस्कोच), गेंद खेलना, गिल्ली डंडा, रस्सी कूदना और खेल क्रियाओं द्वारा चुस्ती–फुर्ती, संतुलन बनाना, निषाना लगाना जैसे कौषल सीखते हैं।

चित्र 4.8: मैदानी खेल

4.6.2 भाषा विकास

बच्चे के भाषा विकास में खेल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। खेलते समय बच्चे एक–दूसरे से बातचीत भी करते हैं, जिससे भाषा विकास में सहायता मिलती है। खेल के दौरान उन्हें इस प्रकार अपनी बात कहनी होती है कि दूसरे उसे समझ सकें और इसी तरह दूसरे उनसे क्या कहने की कोषिष कर रहे हैं, उसे समझना भी उन्हें सीखना होता है। स्पष्ट है कि खेल बच्चे की भावाभिव्यक्ति करने, अपनी बात स्पष्ट करने, व्याख्या करने, दूसरों की बातें समझने और प्रष्न करने और जानकारी प्राप्त करने संबंधी योग्यताओं के विकास में योगदान देते हैं।

शब्द पहेली, काव्य पहेली, प्रष्न पहेली आदि से शब्द भंडार को बढ़ाने में सहायता मिलती है।

4.6.3 संज्ञानात्मक विकास

पुस्तक, टेलीविजन, खेलकूद पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया आदि के **माध्यम से क्रीड़ाएँ बहुत सी बाते सीखने के अवसर प्रदान करती हैं।**

खेलने के दौरान बच्चे अनेक प्रकार की वस्तुओं को वर्गीकृत करना, श्रेणीबद्ध करना और विभिन्न वस्तुओं के बीच संबंध स्थापित करना सीखते हैं। रेत–मिट्टी या गारे के साथ खेलने से बच्चों को यह सीखने समझने का अवसर मिलता है कि किस प्रकार थोड़े से हेर–फेर से ही इनसे अनेक प्रकार की वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, प्राथमिक विद्यालय की लड़की गीली मिट्टी से संभवतः सिर्फ गेंद और टिकिया बनाएगी। जैसे–जैसे वह बड़ी होगी, वह क्रमषः सुरंग, रेत के घर (घरोदें), सड़कें और यहाँ तक बड़े–बड़े घर, किले, आदि बनाना प्रारंभ कर देगी। इन सभी क्रियाओं में क्रमषः अधिकाधिक उच्च स्तर की संज्ञानात्मक सक्रियता की आवष्यकता होती है।

स्मृति के विकास और विश्लेषण कर सकने की योग्यता, तर्क शक्ति तथा विभिन्न विकल्पों पर सोच सकने की योग्यता के विकास में भी खेलकूद सहायता करते हैं। लँगड़ी टाँग" एक सीधा सादा खेल हैं जिसमें लड़के को सोचना पड़ता है कि अपने साथी को पकड़ने के लिए उसे किस दिषा में जाना है। उसे ऐसी कौन–सी दिषा में जाना चाहिए ताकि वह अपने साथी या उससे बच सके। इसी तरह 'खो–खो', कबड्डी, गेंद–मारा–मारी जैसे दूसरे खेलों में भी बच्चों को जटिल चिंतन प्रक्रियाओं का प्रयोग करना होता है।

चित्र 4.9: संज्ञानात्मक विकास को प्रेरित करता खेल

खेल के माध्यम से बच्चा ऐसी योग्यताएँ भी विकसित कर लेता है जिनसे वह उस समय के लिए हुए कार्य पर ध्यान केन्द्रित करता है। पहेलियाँ हल करना, किताबें पढ़ना, सामूहिक खेलकूद जैसे क्रियाकलापों में बच्चे को एक निष्चित समय के लिए क्रिया–विशेष के लिए एकाग्रचित होना पड़ता है जिससे उसके अवधान और एकाग्रचितता में सुधार होता है।

4.6.4 सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास

बच्चे के सामाजिक–संवेगात्मक विकास के लिए खेलकूद अत्यधिक आवष्यक है। प्रारंभ में खेल ही ऐसा माध्यम होता है जिसके माध्यम से बच्चे सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होते हैं। खेल के समय बच्चा दूसरे अनेक बच्चों के संपर्क में आता है, जिससे वह भिन्न–भिन्न बच्चों के साथ सीखता है। वह मिल–बाँट कर कार्य करना, दूसरे बच्चे को सहयोग देना, एक–दूसरे के साथ–साथ लेनदेन करना और दूसरों के दृष्टिकोण को समझना सीखता है। दूसरे बच्चों के साथ खेलने के जितने अधिक अवसर उसे मिलते हैं उतने ही ज्यादा सामाजिक कौषलों को ग्रहण करने के मौके उसे मिलते हैं।

दूसरे बच्चों के साथ खेलने से बच्चे में स्वस्थ स्पर्धा की भावना के विकास में सहायता मिलती है और वह एक अच्छा खिलाड़ी–एक अच्छा विजेता या पराजयी होना सीख जाता है। खेलकूद से बच्चों को नियमों का पालन करना सीखने के अवसर भी मिलते हैं।

काल्पनिक खेलों में बच्चे ऐसी घटनाओं–स्थितियों या पात्रों का अभिनव करते हैं – जिन्हें वे अपने आसपास देख चुके होते हैं। काल्पनिक खेलों के माध्यम से ही वे अपने लिंग आधारित भूमिकाएँ सीखते हैं अर्थात् लड़कों की सामाजिक भूमिका क्या होती है और लड़कियों की क्या, इसे सीखने का अवसर काल्पनिक खेलों से मिलता हैं ऐसी इच्छाएँ या आवष्यकताएँ जो यथार्थ में पूरी नहीं हो सकतीं। वे प्रायः इन खेलों के माध्यम से पूरी हो जाती हैं। जो बच्चा अपने वास्तविक जीवन में नेतृत्व कर पाने में असमर्थ रहता है, हो सकता है, वह सिपाही वाले खिलौनों के नेता की कल्पना द्वारा अपनी इस इच्छा को संतुष्ट कर लें। **खेल के माध्यम से बच्चा अपने मन में छुपी ऐसी कुंठित और आक्रामक भावनाओं और संवेगों को भी निकाल बाहर करता है जिन्हें वह अन्य किसी प्रकार से अभिव्यक्त नहीं कर सकता।** छोटा बच्चा जो अपनी वास्तविक जिन्दगी में दादागिरी करने वाले लड़के से बदला नहीं ले सकता, वह अपने खिलौनों को फेंककर तोड़–फोड़ कर या सजा देकर अपना गुस्सा निकाल सकता है। खेलते समय बच्चा बिना किसी रुकावट के अपने खिलौनों आदि को फैंक सकता है तोड़कर चूर–चूर कर सकता है, मसल सकता है, मरोड़ सकता है। इन सबसे उसे अपनी कुंठाओं को बाहर निकालने का मौका मिल सकता है और अक्सर ऐसा करने से बच्चे स्वयं को दबाव मुक्त महसूस करने लगते हैं।

खेलकूद में बच्चों को अपनी योग्यताओं और कौषलों को प्रदर्षित करने का अवसर मिलता है। वे अपनी योग्यताओं को समझ सकते हैं और अपनी योग्यताओं की तुलना अपने साथी खिलाड़ियों से करना सीखते हैं। इन सबसे बच्चे में स्वयं के बारे में अधिक यथार्थपूरक तथा स्पष्ट धारणा विकसित होती है। अर्थात् बच्चा अपनी वास्तविकताओं को समझने लगता है, अपने गुण दोषों का अहसास करने लगता है।

4.6.5 सर्जनात्मक एवं कल्पनात्मक शक्ति का विकास

खेलकूद के दौरान बच्चों को कल्पना और सर्जनषीलता विकसित करने के अनेक अवसर मिलते हैं। काल्पनिक या नाटकीय खेलों में बच्चा अपनी कल्पना शक्ति का भरपूर प्रयोग करते हैं। पुलिस और चोर, डाक्टर–मरीज, षिक्षक–छात्र आदि खेलते हैं। एक पल के लिए बच्चा डाक्टर बनता है तो दूसरे पल वह मरीज का अभिनय कर रहा होता है।

काल्पनिक अभिनय के माध्यम से बच्चा–विभिन्न चरित्रों का अभिनय करता है जिससे उसकी मौलिक अभिव्यक्ति में सुधार होता है। वह व्यक्तियों और वस्तुओं के बीच नवीन संबंधों के बारे में सीखता है। खेलते समय बच्चा अपने आसपास उपलब्ध वस्तुओं को उलटपुलट कर देखता है। अपनी इच्छानुसार उन्हें तोड़ने–मरोड़ने, बदलने, चलाने–फिराने की कोषिष करता है और इन सबसे नई वस्तुओं का सर्जन कर डालता है यह सब उसकी सर्जनात्मकता के विकास में सहायक होता है। वे मिट्टी, रद्दी सामान और कागज वगैरा से नई–नई चीजें बनाना सीख जाते हैं।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

7) बच्चों में निम्नलिखित क्षेत्रों में विकास को प्रोत्साहित करने वाली 3–3 खेल संबंधी गतिविधियाँ/क्रियाकलापों की सूची बनाइए।

   i) शारीरिक विकास

   ii) गामक विकास

   iii) संज्ञानात्मक विकास

   iv) सामाजिक–सांवेगिक विकास

   v) सृजनात्मक एक कल्पना शक्ति का विकास

8) नीचे कुछ खेलों के उदाहरण दिए गए हैं बताइए कि कौन सा खेल, किस पक्षों के विकास को प्रोत्साहित करता है? सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प को (√) चिन्हित कीजिए।

   i) शतरंज – (क) शारीरिक विकास (ख) तार्किक चिंतन (ग) भाषा विकास

   ii) घर–घर खेलना– (क) कल्पना (ख) भाषा विकास (ग) शारीरिक विकास

   iii) साइकिल चलाना – (क) शारीरिक विकास (ख) भाषा (ग) सामाजिक विकास

   iv) अंताक्षरी – (क) गामक विकास (ख) संज्ञानात्मक चिंतन (ग) भाषा विकास

9) आपके विचार से निम्न में से कौन–सी गतिविधि/परिस्थिति, बच्चों में सृजनात्मकता एवं कल्पनाषक्ति के विकास को बढ़ावा देती है?

   i) एक छः वर्ष के बच्चे को मोम/पानी के रंग दिए गए और एक लाल फूल और हरी पत्तियों को रंगने को कहा गया।

   ii) आठ वर्षीय बच्चों के समूह को बगीचे से एकत्र किए गए फूलों, पत्तियों एवं पत्थरों आदि से एक "कोलॉज" बनाने को कहा गया।

   iii) सुश्री विद्या ने कक्षा दो के बच्चे के सामने एक "गणपति" का चित्र बनाया और उन्हें उसकी नकल करने को कहा।

   iv) कक्षा तीन के बच्चों ने अपने पुस्तकालय में एक पुस्तक में भरत–षकुन्तला की कहानी पढ़ी। उन्हें उस कहानी के विभिन्न पात्रों के अभिनय करने को प्रोत्साहित किया गया।

   v) कक्षा चार के बच्चों को एक वस्तु के बारे में सोचने को कहा गया और उन्हें दूसरे बच्चों को अभिनय मात्र से यह समझने को कहा गया कि वह क्या वस्तु है?

4.7 खेलकूद व अन्य क्रियाकलाप

आप बच्चे के विकास में खेलों के महत्व के बारे में पढ़ चुके हैं। यहाँ आप खेल का अध्ययन समस्यात्मक बच्चों की सहायता के माध्यम के रूप में करेंगे। खेल तथा इसी प्रकार के अन्य क्रियाकलाप, जैसे संगीत, नृत्य, कला एवं पात्र अभिनय को बच्चों की स्वयं की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। तब इनके माध्यम से बच्चों को उनकी समस्याओं से अवगत करा कर उनके व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।

प्रकरण 1

"तुम यहीं रुको" अध्यापक ने "जुड़ों" से कहा और प्रधानाचार्य के कमरे में चले गया। दस वर्ष की आयु के अवज्ञाकारी "जुड़ों" को बाहर खड़ा रहने को कहा। अध्यापक ने प्रधानाचार्य से "जुड़ों" की षिकायत की कि वह थोड़ा–सा उकसाने पर दूसरे विद्यार्थियों को पीटता है, आज्ञा–पालन नहीं करता है, आदि–आदि। शीघ्र ही "जुड़ों" को भीतर बुलाया गया।

प्रधानाचार्य ने कहा, "आपके अध्यापक कहते कि आप फिर से झगड़ने लगे हो।"

....(जुड़ों कोई जबाव नहीं देता है)

प्रधानाचार्य ने पूछा, "बोलो तुमने दूसरे लड़के को क्यों पीटा।"

....(जुड़ों कोई जबाव नहीं देता है)

"हम तुम से तंग आ गए हैं, प्रत्येक दूसरे दिन किसी न किसी समस्या के साथ यहाँ लाए जाते हों।" प्रधानाचार्य बोले।

प्रधानाचार्य ने बेंत उठाई और जुड़ों को पीटा। फिर जुड़ों और उसका अध्यापक कक्षा में लौट आएँ। कक्षा का कार्य पूर्ववत् चलता रहा और जुड़ों रोता रहा। दोपहर बाद जुड़ों कक्षा से अनुपस्थित था। अध्यापक ने उसकी सूचना प्रधानाचार्य को दी। प्रधानाचार्य ने जुड़ों के माता–पिता से संपर्क किया तो पता चला कि जुड़ों घर भी नहीं पहुँचा था। जुड़ों का पता लगाने में उसके माता–पिता को तीन दिन लगे।

जुड़ों की यह घटना तमिलनाडु के एक विद्यालय की है। हमें मालूम है कि यह घटना अकेली नहीं है, ऐसी घटनाएँ तो अक्सर कई विद्यालयों में होती रहती हैं।

गतिविधि I

जुड़ों की समस्या क्या है? वह बहुत ही उग्र स्वभाव का है, आसानी से भड़क उठता है और अवज्ञाकारी है। आप इस प्रकार के बच्चों में और किन–किन समस्याओं को देखते हों?

1) ....

2) ....

3) ....

4) ....

5) ....

जुड़ों के प्रकरण में, उसको सुधारने के लिए अध्यापकों और उसके माता–पिता भी उसे लगातार बेंत से पिटाई और मारते–पीटते थे। जैसा कि आपने देखा, इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

आपके विद्यालय में इस प्रकार के बच्चों से कैसा व्यवहार किया जाता है? शायद पीटना, बैंच पर खड़ा करना, डाँटना, खेलने से वंचित करना, आदि ये दण्ड की सामान्य किस्में हैं। इस प्रकार के दण्ड अध्यापक के क्रोध को शांत तो कर देते हैं या परिस्थिति पर तत्काल नियंत्रण पा लेते हैं परंतु ये तरीके आगे चलकर बच्चे को बहुत हानि पहुँचाते हैं। इस प्रकार के दण्ड से, उनमें विद्यालय, अध्यापक एवं षिक्षण के प्रति अत्यधिक भय व्याप्त हो जाता है। विद्रोह की भावना पनप जाती हैं और उनके आत्मसम्मान को चोट लगाने का कारण हो जाती हैं।

आइए, देखें, जुड़ों के साथ आगे क्या हुआ। उसके पिता उसे फिर विद्यालय लाए। बहुत आनाकानी टालमटोल के बाद प्रधानाचार्य ने उसे पुनः प्रवेष दिया। यह प्रकरण अध्यापकों की बैठकों में आया। खेल अध्यापक ने जुड़ों पर व्यक्तिगत ध्यान देने की जिम्मेदारी ली। प्रधानाचार्य ने खुषी से यह जिम्मेदारी अध्यापक को सौंप दी।

खेल अध्यापक ने बड़े प्रयत्न से जुड़ों के साथ स्नेहपूर्ण संबंध स्थापित कर लिए। उसने जुड़ों को कई खेल बताए और पाया कि वह फुटबाल में रुचि रखता है। उसने जुड़ों को प्रतिदिन कक्षा के पष्चात् 45 मिनट तक दूसरे बच्चों के साथ खेलने का अवसर दिया। उसने समय–समय पर जुड़ों से उसकी दूसरों के साथ न बनने के मामले पर चर्चा की। जुड़ों जो दूसरों पर ही दोष देता रहता था, धीरे–धीरे अपने कृत्यों के लिए अपने को दोषी मानने लगा। शीघ्र ही जुड़ों ने नियमानुसार खेल खेलना सीख लिया। वह पूर्ण शक्ति से गेंद को लात मारता था, उसकी शक्ति खेलों में प्रयुक्त होने लगी। उसको अपनी टीम का कप्तान बना दिया गया। उसके साथी उसे आदर से देखने लगे। सत्र के अंत तक उसके कक्षा अध्यापक ने जुड़ों के व्यवहार में परिपक्वता एवं जिम्मेदारी पायी। अब वह दूसरे बच्चों से नहीं लड़ता–झगड़ता था।

गतिविधि II

आपकी दृष्टि से जुड़ों में परिवर्तन क्यों आया? खेल अध्यापक उसमें किस प्रकार परिवर्तन ला पाए? आप अपना उत्तर यहाँ लिखिए और नीचे दिए तथ्यों से तुलना करें।

आपका उत्तर

....

....

....

....

....

यहाँ खेल अध्यापक ने खेल को बच्चे की समस्या के निराकरण का अनौपचारिक माध्यम बनाया। कुछ लोगों ने अधिक संरचनात्मक और प्रणालीबद्ध तरीके से खेल को एक व्यवस्थित ढंग से समस्यात्मक बच्चों की सहायता के लिए प्रयुक्त किया है। इसको हम "खेल उपचार" कह सकते हैं। खेल उपचार के अतिरिक्त, लोगों ने कई अन्य क्रियाएँ जैसे पात्र अभिनय, चित्रकला, संगीत एवं नृत्य को समस्यात्मक बच्चों की सहायता के लिए उपयोग किया है। एक–एक करके हम इन क्रियाकलापों पर चर्चा करेंगे।

4.8 खेल में अध्यापक की भूमिका

पूर्व बाल्यावस्था में अध्यापक कक्षा में एक खेल का सहायक होता है। वह बच्चों के साथ कार्य करते हुए अंदर व बाहर के सुरक्षित खेलों के लिए नियम बनाने में सहायता करता है। सामान्यतः, अध्यापकों के खेलों के विषय में दो दृष्टिकोण हैं (1) आदर्ष दृष्टिकोण एवं (2) प्रयोजनवादी दृष्टिकोण।

आदर्षवादी दृष्टिकोण वाले अध्यापक, खेलों को अपने बचपन के खेलों के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। वे खेलों को "बच्चों की प्रकृति" से जोड़ते हैं (वाल्टबर्ग, लेंज – तगूजी, 1994, लेंज–तगूची, 1997)। इस दृष्टिकोण से खेल प्राकृतिक है और उन्हें एक खाके की आवष्यकता है। इनके अनुसार, बहुत अधिक खिलौने बच्चों के प्राकृतिक कल्पनालोक को नुकसान पहुँचाते हैं। इसकी तुलना पियाजे के दृष्टिकोण से की जा सकती है जो खेलों की एक जैविक आधार के रूप में व्याख्या करता है। कुछ है जो प्रकृति प्रदत्त हैं जो हर आयु के लिए सामान्य और स्थायी हैं और जो संस्कृति एवं काल दोनों को पोषित करता है (पियाजे, 1962)।

दूसरी ओर, प्रयोजनवादी दृष्टिकोण वाले अध्यापक, बच्चों के खेल की अवधारणा संस्कृति के प्रदर्षन के रूप में रखते हैं, कुछ ऐसा जो संस्कृति में ही रचा–बसा है और विभिन्न कालों व समाजों में अलग–अलग रूप से दिखाई पड़ता है। यह दृष्टिकोण, व्योगोत्सकी की खेल संबंधी अवधारणा से समानता रखता है। व्योगोत्सकी (1990, 1995) ने बल दिया कि बच्चों के खेलों में अक्सर वह परिलक्षित होता है जो वह देखते हैं या बड़ों से सुनते हैं यद्यपि खेलों में बच्चे इन अनुभवों को सृजनात्मक रूप से प्रदर्षित करते हैं। वह यह भी इंगित करते हैं कि बच्चे जिस संस्कृति में रहते हैं, उससे प्रभावित भी होते हैं।

दृष्टिकोणों में चाहे जो भिन्नता हो, बच्चों के खेलों में अध्यापकों की भूमिका पर प्रकाष डालना आवष्यक हैः

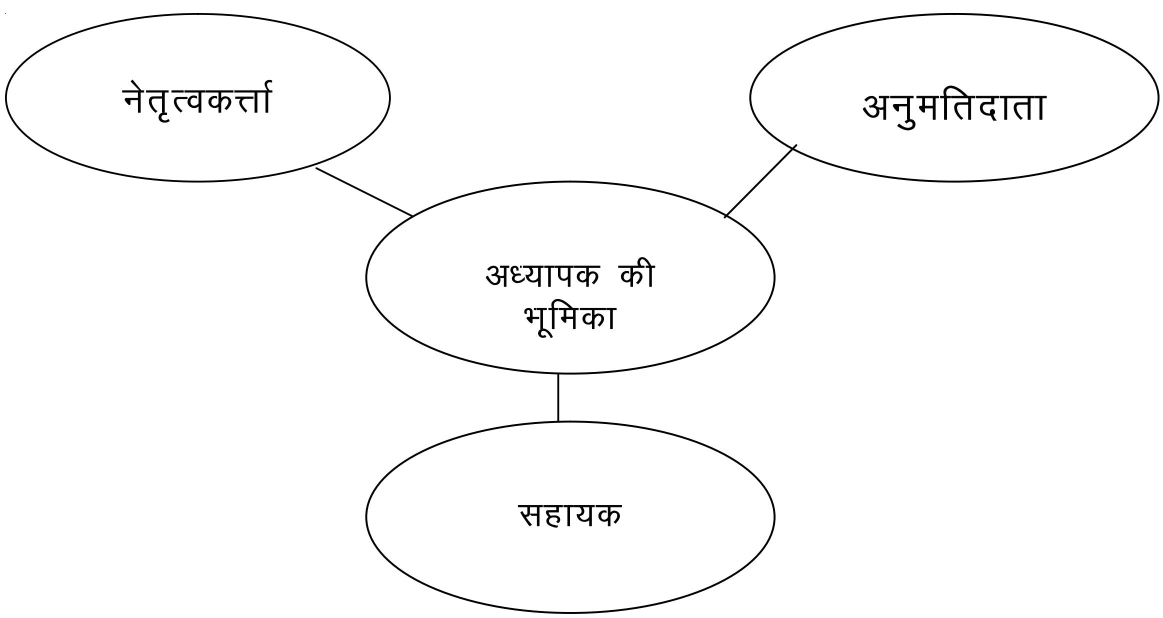

चित्र 4.10ः बच्चों के खेलते समय अध्यापक की भूमिका

1) अध्यापक एक नेतृत्वकर्त्ता के रूप में

इस रूप में अध्यापक की भूमिका गतिविधियों का नेतृत्व करने की और बच्चों द्वारा उसके निर्देषों का पालन करने की होती है। अध्यापक की योजना बनाने एवं लागू करने दोनों में सक्रिय भूमिका होती है। नेता खेलों को प्रारंभिक तौर पर संज्ञानात्मक रूप में देखता है। अधिकांषतः अध्यापक द्वारा नेतृत्वित खेल तीन रूपों में होते हैंः (1) शैक्षिक खेल, (2) प्रसन्नता प्रदान करने वाले खेल, एवं (3) शारीरिक खेल।

संगीत, काव्यपाठ, गीत, स्मरण आधारित खेल, शब्द पहेली, बोर्डगेम, अनुमान आधारित खेल, गणितीय खेल तथा कल्पना लोक का भ्रमण आदि **शैक्षिक खेलों** के अंतर्गत आते हैं। स्मरण आधारित खेलों को खेलने के बाद, अध्यापक मानव मस्तिष्क, लम्बी स्मरण शक्ति तथा अल्पकालिक स्मरण आदि पर चर्चा कर सकता है। **प्रसन्नता प्रदान करने वाले खेल** सामान्यतः कुछ पल के होते हैं पाठ के प्रारंभ या अन्त में बच्चों को प्रसन्न करने के लिए खेले जाते हैं। इन खेलों का मुख्य प्रयोजन बच्चों को पाठ्यक्रम आधारित अधिगम के लिए, बच्चों को प्रोत्साहित करना होता है। तरोताजा करने के लिए और शारीरिक व्यायाम के लिए, **शारीरिक खेल** प्रयोग होते हैं। इस प्रकार के खेल सामान्यतः पाठ्यक्रम एवं शारीरिक षिक्षा के बीच संबंध स्थापित करते हैं, जहाँ खेल बच्चों में गामक कौषल, संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं सांवेगिक क्षमताओं का विकास करते हैं।

2) अध्यापक अनुमतिदाता के रूप में

अनुमतिदाता के रूप में अध्यापक की भूमिका उसका सामाजिक पक्ष है। वह कोई अधि ागम आवष्यकताएँ प्रस्तुत नहीं करता। सामाजिक दृष्टिकोण से चार प्रकार के खेल होते हैंः (1) स्वांग अभिनय, (2) पारंपरिक खेल, (3) प्रामाणिक खेल, (4) स्वतंत्र खेल। इन खेलों में नियमों और साथियों के साथ संबंधों में बदलाव की संभावना रहती है। यह सामाजिक संबंधों का विकास भी करते हैं।

स्वांग अभिनय का उद्देष्य विभिन्न भूमिकाओं में अभिन्य कराना होता है जो सृजनात्मकता, सहयोग एवं साथियों के साथ टोली–भावना की वृद्धि करते हैं। प्रामाणिक खेल, सर्वाधिक विष्वसनीय माने जाते हैं क्योंकि यह पूरी तरह से बच्चों के प्रयास होते हैं। वे छड़ी से गिल्ली–डंडा खेलते हैं।

चित्र 4.11: गुल्ली-डंडा– एक पारम्परिक खेल

इसमें किसी उत्पादित वस्तु की आवष्यकता नहीं होती है। बच्चों को जो उपकरण चाहिए, वे उन्हें ढूँढ़ लेते हैं। पर्यावरण के साथ खेलने से बच्चे दो चीजें सीखते हैं: (1) पर्यावरण संरक्षित रखना एवं (2) उत्पादन करना। पर्यावरणीय खेल बच्चों को सिखाते हैं कि ये पदार्थ कहाँ से प्राप्त होते हैं। यदि निर्वनीकरण होता रहा तो कहाँ से उन्हें ये सामग्री मिलेगी और कहाँ से उन पेड़ों की छाया, तो वे कैसे खेलेंगे? ऐसे खेल उन्हें, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

परंपरागत खेलों जैसे फुटबॉल, एक बोर्ड पर दस छड़ें, गेंद–तड़ी, चोर–सिपाही में अधिक शारीरिक गतिविधियाँ और मजा शामिल होता है। ऐसे खेल सामान्यतः मैदानी होते हैं जिनमें लक्ष्य सांवेगिक, सामाजिक एवं शारीरिक मूल्यों के औचित्य को पोषित करते हैं। इन्हें मित्रता तथा साथ–साथ रहने की आदत को बढ़ावा देने के लिए आवष्यक माना जाता है।

3) अध्यापक एक सहायक के रूप में

यहाँ अध्यापक की भूमिका, खेलों द्वारा अधिगम में सहायता करने की होती है। इस भूमिका में, अध्यापक उसे ऐसी खेल प्रक्रियाओं की योजना बनानी होती है जिसमें खेल, विकास और आंकलन शामिल हो। यद्यपि इसमें अधिगम के सभी पक्ष जुड़े होते हैं, पर संज्ञानात्मक व सांवेगिक पक्ष ज्यादा प्रभावी होते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, बच्चे की समझ और उसका सामाजिक परिदृष्य बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह शैक्षणिक चिंतन का आधार तैयार करते हैं।

एक खेल की योजना व क्रियान्वयन के समय, एक अध्यापक निम्नलिखित प्रष्नों का सामना करता है:

- पाठ्यक्रम के अनुसार किस प्रकार की खेल गतिविधियों का चयन किया जाए?
- बच्चों की खेलों के कैसे अवसर मिलने चाहिए?
- आपको विभिन्न खेल गतिविधियों में बच्चों को कौन से लाभ मिलने की उम्मीद है?
- एक खेल कितनी लिंगीय समानता प्रदान कर सकता है?
- आप खेल गतिविधियों द्वारा बच्चों के अधिगम के संबंध में क्या निर्णय ले सकते हैं?

बच्चों के खेल के दौरान अध्यापकों के लिए कुछ सलाह

- वातावरण का निर्माण (भौतिक स्थान, पदार्थ, संसाधन, सांवेगिक वातावरण, खेल के समय)
- पाठ्यक्रम के अनुसार खेलों की योजना
- द्वंद्व का समाधान
- बच्चों का खेल सुनिष्चित करना
- अधिगम में सहायता एवं अवसर प्रदान करना
- बच्चों को प्रोत्साहित करना

गतिविधि III

इस सप्ताह में एक दिन अपनी योजनाओं पर ध्यान दीजिए, और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़िए।

क) बच्चों को खेले के कौन से अवसर मिलेंगे?

....

....

....

....

....

ख) आपने किस प्रकार की खेल गतिविधि की योजना बनाई है?

....

....

....

....

....

ग) आपको क्या लगता है कि बच्चे विभिन्न खेल गतिविधियों से क्या सीखेंगे?

....

....

....

....

....

4.9 मूलभूत सिद्धांत

एक अध्यापक को सहायता देते समय निम्नलिखित मूलभूत सिद्धांतों को अपनाना पड़ता है।

4.9.1 बच्चों के साथ जोषीला एवं मित्रवत संबंध विकसित करना

आप बच्चों के साथ मित्रता कैसे प्रदर्षित करते हैं? एक मुस्कान आपकी आत्मीयता और मित्रवत व्यवहार का संकेत देती है। जब आप बच्चों से मिलें, कुछ अच्छे शब्द, आपका स्थान बना सकते हैं। बच्चे की पीठ पर एक हल्की सी थपकी, उसे आपका स्नेह दिखा सकती है। आप अपने स्वर और वाणी से भी अपना जोष प्रदर्षित कर सकते हैं। आपको यदि लगता है कि बच्चे आपके मित्रवत व्यवहार पर प्रतिक्रिया नहीं दे रहे हैं, हतोत्साहित न हों। आप पूरी गतिविधि के दौरान, जिसमें उसे शामिल करना है, अपना मित्रवत व्यवहार जारी रखें।

4.9.2 बच्चों को स्वीकार करना

बच्चों की पूर्ण स्वीकार्यता प्रदर्षित करनी होगी। इसे आप अपने व्यवहार में कैसे प्रदर्षित करेंगे?

i) आलोचना से बचकर

ii) धैर्य न खोकर

iii) ....

आप शांतचित्त रहकर, बच्चों के साथ निरंतर सामान्य मित्रवत् व्यवहार रखकर स्वीकार्यता प्रदर्षित कर सकते हैं। कभी की धैर्य न खोएँ। आपको स्वयं को आलोचना तथा नकारात्मक टिप्पणियों से बचाना है। बच्चे बहुत संवेदी होते हैं। वे शब्दों या संकेतों द्वारा भी नकारे जाने पर अक्सर उखड़ जाते हैं।

4.9.3 स्वतंत्रता का वातावरण स्थापित करना

बच्चों को गतिविधि करते समय स्वतंत्रता का आनंद लेने देना चाहिए। बच्चे को अनुभव करने दें कि वह सब कुछ स्वयं है। कोई बच्चे को न बताए कि क्या करो और क्या नहीं है? बच्चा, जो चाहे, जैसे चाहे, करने दें।

कभी–कभी कुछ आलसी बच्चे होते हैं जो गतिविधि के समय कुछ नहीं करते, केवल बैठे रहते हैं। सामान्यतः शुरु में ऐसा अक्सर होता है। यहाँ हम बच्चों को कुछ न कुछ करने के लिए तैयार करते हैं। यह स्वतंत्रता नहीं है। यदि बच्चा केवल कैसा और देखना चाहता है, तो हमें उसका आदर करना चाहिए। ऐसे अवसरों पर हम कह सकते हैं कि "यदि तुम्हें खड़े होने में कठिनाई हो रही है तो तुम बैठ जाओं और देखों" ऐसे बच्चों में जोष आने में समय लगता है और हमें धैर्य रखना चाहिए।

कभी–कभी बच्चे अपनी सर्वाधिक क्रुद्ध एवं विनाषकारी भावनाएँ प्रदर्षित करते हैं, वे चिल्लाते हैं, गिर जाते हैं या धूल इधर–उधर फैंकते हैं। उन्हें रोको मत। यह पहला चरण है। बच्चा यहाँ से अधिक निर्माणात्मक व्यवहार की ओर बढ़ सकता है।

4.9.4 भावनाओं की पहचान एवं अभिव्यक्ति

ऐसी गतिविधियों के दौरान यह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि बच्चों द्वारा अभिव्यक्त की गई भावनाओं को पहचाना जाए और बच्चों के सामने इस प्रकार प्रदर्षित किया जाए जिससे वे अपने व्यवहार पर अंतःर्दृष्टि विकसित कर सकें। बच्चे का खेल उसकी भावनाओं का प्रतिबिम्बन है। हमें उन्हें पहचानना है और विश्लेषित करना है। आइए, एक उदाहरण देखें।

एक संकोची बच्ची, खेल के समय गुड़ियों के परिवार से खेल रही है। उसने एक गुड़िया को उसकी माँ के पास और दूसरी को माँ से कुछ दूर रखा है। जब अध्यापिका ने उससे पूछा तो उसने बताया कि उसकी माँ, उसकी छोटी बहन पर ज्यादा ध्यान देती है। अध्यापिका बोली, "तुम्हें तो बुरा लगता होगा जब तुम्हारी माँ, तुम पर ध्यान नहीं देती होगी और केवल तुम्हारी बहन पर ध्यान देती होगी।" इस प्रकार अध्यापिका ने उसकी भावना पहचानी और प्रदर्षित की, अब बच्ची वहाँ से आगे चल दी और बच्ची में अंतर्दृष्टि भी विकसित हुई होगी।

उदाहरण

1) बच्ची ने पिता रूपी गुड्डा लिया और उसे मिट्ठी में दबा दिया और बोली, अब वह उसे नहीं देखेगी। यहाँ उसने कैसी भावना प्रदर्षित की? (संकेतः पिता से क्रोध रखना, एक उत्तर हो सकता है)

2) बच्ची ने गुड़िया के सारे बाल नोच डाले। उसने क्या भाव प्रदर्षित किया? (संकेतः क्रोध)

4.9.5 बच्चे का आदर सुनिष्चित करना

हमें बच्चे की अपनी समस्याओं के स्वयं समाधान करने की योग्यता का आदर करना चाहिए। बच्चों को चयन करने और परिवर्तन लाने की जिम्मेदारी लेने देनी चाहिए, तभी परिचित मूल्यों में परिवर्तन आएँगे। कोई दबाव नहीं डालना चाहिए, बच्चा धीरे–धीरे स्वयं अपना व्यवहार परिवर्तित कर लेगा। यह छोटी–छोटी वस्तुओं से प्रारंभ होता है और वृहद स्तर पर फैल जाता है। परंतु बच्चे के प्रति हमारा सम्मान उसे आत्मविष्वास, आत्मसम्मान और आत्मानुभूति प्राप्त करने में मदद करेगा। यह सभी कुछ गतिविधि समय में होता है।

4.9.6 बच्चे अपना रास्ता स्वयं चुनते हैं

बच्चा वैसे ही कुछ करता है, जैसा उसे पसंद होता है। हम सलाह नहीं देते। यदि बच्चा मिट्टी से कुछ बनाना चाहता है, हमें नहीं कहना चाहिए यह आकृति या ऐसे बनाओ। बच्चा स्वयं रास्ता चुनेगा और हम उसका पालन करेंगे।

छोटे–छोटे समूह के नाटकों में संभव है कि कोई बच्चा, पूरी तरह से दूसरे बच्चों द्वारा शासित हो, हमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। ऐसी सलाह दी जाती है। बच्चे को यह अनुभव करने दें कि वह दूसरों के प्रभाव में है और उसे इसमें से स्वयं निकलना है।

4.9.7 जल्दबाजी नहीं करें

व्यवहार परिवर्तन एक क्रमिक प्रक्रिया है। हमें जल्दबाजी नहीं करनी है। जब बच्चा अपनी भावनाओं को प्रदर्षित करने के लिए तैयार होगा, वह स्वयं ऐसा करेगा। संकोची एवं दुर्बल बच्चे दो तीन बार के बाद ही अपनी भावनाओं का प्रदर्षन कर पाते हैं। यदि बच्चा दो–तीन बार के बाद भी ऐसा न करे तो हमें जाँच करनी चाहिए कि उसकी प्रतिरोधकता का क्या कारण है? हमेषा ध्यान में रखो कि परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी एवं सतत है।

4.9.8 सीमाओं का निर्धारण

यद्यपि हम खेल सत्रों में बच्चों को पर्याप्त स्वतंत्रता देते हैं, फिर भी हमें कुछ सीमाओं के निर्धारण की आवष्यकता है जो बच्चों को दुनिया की सच्चाई दिखाए तथा उसमें, उसके व्यवहार के प्रति जिम्मेदारी का अहसास कराएँ।

- बच्चों को वस्तुओं को तोड़ने की अनुमति नहीं दी जा सकती। मान लीजिए, बच्चा एक गुटका उठाकर, खिड़की के शीशे पर मारना चाहता है, तो हमें कहना चाहिए "ऐसा मत करो", यदि तुम्हें गुटका फैंकना ही है तो इसे नीचे फेंक दो।" आपके कहने के बाद भी यदि आपको आषंका है कि बच्चा ऐसा करने जा रहा है, आप उससे झगड़े बिना शारीरिक रूप से उसे रोक सकते हैं परंतु उसको अस्वीकार न करें।

- समय एक महत्वपूर्ण कारक है। यदि आपने तय किया है कि प्रत्येक सत्र 45 मिनट में समाप्त होगा तो बच्चे को इसके बारे में बताएँ। यदि बच्चा उसके बाद भी खेलना चाहता है, तो इसकी अनुमति न दें। बच्चे की विनती पर समयावधि न बढ़ाए।

- बच्चों को शारीरिक रूप से अध्यापक या दूसरों या स्वयं को चोट पहुँचाने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

ये सीमाएँ बच्चे को जिम्मेदारी का ध्यान दिलाएँगी तथा उसे वास्तविकता से परिचित कराएँगी।

बोध प्रष्न

टिप्पणी: क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

10) आपके विचार से निम्न में से क्या खेल के प्रोत्साहन में मदद करेगा?

i) खेल गतिविधियों द्वारा षिक्षण

ii) खेल उपकरणों को उपलब्ध कराना

iii) बच्चों के लिए तय करना कि वे क्या खेलें?

iv) विद्यालय समय में खेलों के लिए समय प्रदान करना

v) दूसरे खेल से पहले, एक खेल को समाप्त करना

vi) गृहकार्य का भार कम करना

vii) बच्चों के लिए तय करना कि वे किसके साथ खेलें?

11) मान लीजिए आपने "वन्य जीवन" पर एक पाठ चुना है। आपको बच्चों को पषुपक्षियों, उनके खान–पान, उनके रहन–सहन, आदि के विषय में बताना है। इन प्रयोगों को अपनी कक्षा में पढ़ाने के लिए एक खेल गतिविधि का निर्माण करें।

....

....

....

....

4.10 माता–पिता को शामिल करना

अपने बच्चों को पूर्व प्राथमिक व प्रारंभिक विद्यालयों के लिए तैयार करने में माता–पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे बच्चे के जीवन में अवष्य ही प्रथम अध्यापक हैं जो एक सहायक अधिगम वातावरण प्रदान कर सकते हैं। "बच्चों को खेल का अधिकार है" कथन के प्रति कुछ प्रतिक्रियाएँ हमें माता–पिता की खेल के प्रति अभिवृत्ति के विषय में बताती हैं।

पिताः "खेल का अधिकार!" वैसे भी वे हर समय खेलते हैं जागो आर खेलने की बजाय कुछ अर्थपूर्ण करो।

माताः "बहुत हो गया!" वार्षिक परीक्षा में केवल 3 माह बचे हैं। न खेल, न टी.वी., न कम्प्यूटर। तुम्हें पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए और केवल पढ़ना चाहिए।

उपरोक्त कथन, माता–पिता का खेलों के प्रति दृष्टिकोण दिखाते हैं। परंतु बाल अधिकार संधिपत्र कहता है कि "बच्चे को खाली समय व्यतीत करने, खेलने और सांस्कृतिक व कलात्मक क्रियाकलापों में भाग लेने का अधिकार है" (संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार संधिपत्र, धारा 31)। माता–पिता प्रत्येक बच्चे के जीवन के अभिन्न अंग हैं। वे प्रत्यक्ष षिक्षा प्रारंभ होने से पूर्व ही बच्चे को बहुत से अधिगम अनुभव प्रदान करते हैं। अध्यापक द्वारा खेलों व अन्य गतिविधियों के प्रोत्साहित करने के प्रयास अपूर्ण रहेंगे यदि माता–पिता को उनमें शामिल न किया जाए। **बच्चे अपने समय का एक बहुत बड़ा भाग घर पर व्यतीत करता है और माता–पिता का बच्चे के विकास में खेल की भूमिका के विषय में जागरूक होना बहुत आवष्यक है।**

साथियों के साथ खेलने के साथ ही, माता–पिता के अपने बच्चों के साथ खेलने का समय निकालना चाहिए। बच्चों को जानना चाहिए कि उनके जीवन में बड़े भी उनके साथ समय बिताना चाहते हैं और वे करना चाहते हैं, जो बच्चा करना चाहते हैं। बच्चों के साथ खेलते समय माता–पिता को बच्चों के स्तर तक आना चाहिएः यदि बच्चा दौड़े तो माता–पिता भी दौड़े। जब बच्चों को बड़ों का समय नहीं मिलता, अक्सर माता–पिता को नजरअंदाज करने लगते हैं और अन्य गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं।

बच्चे खेलों में अपने माता–पिता का व्यवहार दोहराकर उनकी नकल करते हैं। यह उन्हें धीरे–धीरे अधिक सक्षम व अपनी खेल योग्यताओं में निपुण बनाता है (मारजोलो एवं हार्पर, 1972)। कभी–कभी बड़े वह तरीका नहीं मानते जिससे बच्चे खेलते हैं। वे बच्चों को निर्देष देते हैं कि खिलौना कैसे प्रयोग करें? माता–पिता की ओर से यह भी आवष्यक है कि वे अपने बच्चे को दिन में खेलों का पर्याप्त अवसर दें। विशिष्ट योग्यताओं वाले बच्चे तो खेलने में वास्तविक खेल में भी ज्यादा समय लेते हैं। वह समय, जिसमें बच्चे सबसे अच्छा खेलते हैं, को प्रदर्षित करता हुआ एक घोषणापत्र नीचे दिया गया है।

बच्चों के खेल के लिए घोषणापत्र

बच्चे सबसे अच्छा खेलते हैंः

जब प्रौढ़ देखें पर हस्तक्षेप न करें, जब सुरक्षित वातावरण उनमें खोज और साहस को बढ़ावा दे।

जब उनका पूर्ण जीवन में विष्वास हो, वे अनजाने का स्वागत करें और निडर हों।

जब उनके खेल, प्रौढ़ों के नियम से स्वतंत्र हों और परिवर्तनों में कोई अंतिम उत्पाद अपेक्षित न हो।

जब उनकी ज्ञानेन्द्रियाँ सीधे प्रकृति और उसके तत्वों से जुड़ी हों।

जब वे अपना समय और तरीका एकत्र करने, चिन्हित करने और निर्मित करने के लिए स्वतंत्र हो।

जब वे दूसरों के साथ खेल सकें और संबंध बना सके।

जब वे अकेले एकांत में और स्वयं खेल सकें।

जब अपने खेल में दूसरों पर आश्रित हों और उनकी अपनी कल्पनाएँ हों।

जब वे स्वयं की, अपनी प्रसन्नता को, दुख को, चिंताओं को, खराब होने के डर के बिना खोज सकें और जब रहस्य और कल्पनाएँ, तथ्यों द्वारा न नकारी जाएँ।

स्रोतः जेकिंसन एम. (2001)

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

12) बच्चों के लिए शारीरिक रूप से क्रियाशील होना क्यों आवश्यक है? एक माता–पिता/प्रौढ़ के रूप में आप बच्चों को क्रियाशील बनाने में कैसे मदद कर सकते हैं?

....

....

....

....

....

माता–पिता की सहभागिता के बिना अध्यापक द्वारा खेलकूद एवं दूसरे क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के प्रयास अधूरे ही माने जाएँगे। **बच्चा अपना अधिकांष समय घर पर बिताता है। ऐसे में यह अत्यंत आवष्यक हो जाता है कि माता–पिता को भी इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि बच्चे के विकास में खेलकूद की भूमिका क्या होती है?**

अध्यापिका माता–पिता के साथ सामूहिक बैठकों का आयोजन कर सकती है तथा खेल के महत्व और खेल के अभाव से होने वाले संभावित कुप्रभावों की माता–पिता के साथ चर्चा कर सकती है। वह इस बारे में भी सुझाव दे सकती है कि घर पर किस तरह खेल, अनुभव एवं अभ्यास को बढ़ावा दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, माता–पिता को वह यह सुझाव दे सकती है कि बच्चों पर बहुत कठिन परिश्रम करने के लिए दबाव न डालें, साथ ही औरों की उपलब्धियों और प्रतियोगिताओं का बहुत ज्यादा बखान न करें।

बच्चों के पढ़ने–खेलने, टी.वी. देखने और दूसरे क्रियाकलापों को करने के लिए कितना समय दिया। माता–पिता यह सुनिष्चित कर सकते हैं ताकि बच्चे सभी कुछ छोड़–छाड़ कर किसी एक कार्य में ही सारे समय न लगा रह सकें।

यदि बच्चा अपनी इच्छा से माता–पिता के साथ खेत–खलिहान या मैदान पर जाना चाहे तो माता–पिता बाहर खेत–खलिहान पर जाते हुए बच्चे को साथ भी ले जा सकते हैं यदि वह स्वेच्छा से जाना चाहें तो ऐसे माता–पिता जो किसी कला–विशेष जैसे नृत्य, संगीत, कला और हस्तषिल्प आदि में प्रतिभा संपन्न हो तो बच्चों के लिए विद्यालय समय के बाद सप्ताह में, एक या दो बार "हॉबी क्लासेज" भी ले जा सकते हैं।

4.11 काम ही कामः खेल का नहीं नामो–निषान

अध्ययन I

i) मीना की आयु दस वर्ष है। वह सुबह साढ़े सात बजे विद्यालय के लिए चल देती है और दोपहर ढ़ाई बजे घर वापिस लौटती है। दोपहर के भोजन के बाद वह थोड़ी देर आराम करती है। लगभग चार बजे वह अपनी किताबें लेकर बैठ जाती है और गृहकार्य करना शुरु कर देती है। गृहकार्य पूरा करने में उसे कम से कम डेढ़–दो घंटे का समय

लग जाता है। इसके बाद भी यदि अंधेरा होने में कुछ समय होता है तो वह खेलने के लिए बाहर निकलती है।

कभी–कभी उसे खेलने के लिए आधा घंटा मिल जाता है तो कभी बिल्कुल भी समय नहीं मिल पाता; अब इसकी वजह या तो उसके पास गृहकार्य का अकि होना या फिर उसका अगले दिन होने वाली परीक्षा के लिए तैयार करना हो सकता है। पढ़ाई शाम के आठ बजे से पूर्व ही पूरी होनी चाहिए; क्योंकि उसे शाम के टेलीविजन कार्यक्रमों को छोड़ना बहुत बुरा लगता है।

अध्ययन II

ii) राजीव आठवीं कक्षा का विद्यार्थी है, मीना की ही तरह उसे भी सुबह साढ़े सात बजे विद्यालय के लिए चल देना पड़ता है। वह भी दोपहर ढ़ाई बजे अपने घर वापिस पहुँचता है। वह भी थोड़ी देर आराम करने के बाद अपना गृहकार्य करना शुरु कर देता है, परंतु मीना के विपरीत उसे शाम को खेलने के लिए आधे घंटे का समय भी नहीं मिलता क्योंकि उस समय रोजाना वह गणित, विज्ञान और अंग्रेजी के ट्यूषन के साथ–साथ उसे ट्यूटर द्वारा दिया गया काम भी पूरा करना पड़ता है और फिर टेलीविजन के कार्यक्रम भी नहीं छूटने चाहिए।

ऐसी परिस्थिति का सामना करने वालों में सिर्फ मीना और राजीव ही नहीं है। इस तरह की समस्या का सामना करने वाले बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा है। आपके विचार में इसका क्या कारण हो सकता है?

आजकल हमारे विद्यालयों में यह बात ध्यान रखकर पढ़ाया जाता है कि **खेल और अधिगम (सीखने)** में एक स्पष्ट अन्तर है – हमारी षिक्षा व्यवस्था में भी, बिना इस बात पर विचार किए कि खेलकूद संबंधी क्रियाओं से बच्चा सीख सकता है इस बात की ओर ध्यान न देकर यह समझा जाता है कि विद्यालय में बच्चे सिर्फ पढ़ने के लिए आते हैं खेलने के लिए नहीं। परिणामस्वरूप अधिकांषतः बच्चों को "चॉक और भाषण" के द्वारा पढ़ाया जाता है और खेलकूद संबंधी क्रियाकलापों के लिए बहुत ही थोड़ा समय दिया जाता है। सामान्यतः अध्यापक **"पूर्णतः स्मरण विधि" (Sole memory method)** का पालन करते हैं। खेल और दूसरी क्रियाकलापों का प्रयोग सर्जनात्मक ढंग से षिक्षण में सहायक सामग्री के रूप में बहुत कम किया जाता है। **यह निष्चित रूप से कहा जा सकता है कि बच्चे की षिक्षा में खेल और खेल सामग्री के प्रयोग पर बहुत अधिक बल नहीं दिया जाता।**

यहाँ तक कि घर में भी बच्चे के समय का अधिकांष हिस्सा अगले दिन विद्यालय जाकर दिखाए जाने वाले गृहकार्य को पूरा करने में व्यतीत हो जाता हे। आमतौर पर माता–पिता अपने बच्चों के प्रति अत्यधिक महत्वाकांक्षी होते हैं। वे ज्यादा से ज्यादा पढ़ने के लिए बच्चे पर दबाव डालते हैं ऐसे में बच्चा अपना अधिकांष उपयोगी समय विद्यालय का काम करने में बिता देता है इसके बाद जो थोड़ा बहुत समय बचता है वह अक्सर टेलीविजन के कार्यक्रम में निकल जाता है। स्पष्ट है कि जो समय बच्चों को खेलने में बिताना चाहिए सामान्यतः वे उसे टेलीविजन के कार्यक्रम देखने में बिता देते हैं।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों की परिस्थितियों में काफी अंतर होता है। इनमें से कुछ बच्चों के पास उपयुक्त खेलकूद संबंधी क्रियाओं में लगाए जा सकने योग्य पर्याप्त समय तो होता है पर वे उसे गलियों–सड़कों के चक्कर लगाने में व्यर्थ कर देते हैं। उनके खेलकूद की कोई निष्चित दिषा नहीं होती; उन्हें इस संबंध में किस तरह के दिषा–निर्देष

नहीं मिल पाते। न तो उनके खेल व्यवस्थित होते हैं – न ही उन्हें किसी अनुभवी व्यक्ति का मार्गदर्षन ही मिल पाता है। कुछ बच्चे, विशेषकर लड़कियों का अधिकांष समय घर के कामकाज और छोटे भाई–बहनों को संभालने में निकल जाता है। अपनी इच्छानुसार बिताने के लिए उन्हें मुष्किल से ही कभी समय मिल पाता है।

खेलने के अवसरों के अभाव का बच्चों के संपूर्ण विकास पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। जो बच्चा निरंतर अपनी किताबें पढ़ने या टेलीविजन देखने में लगा है उसे शायद ही शारीरिक व्यायाम का अवसर मिल पाएगा और इस बसके परिणामस्वरूप उसका शारीरिक विकास प्रभावित हो सकता है। हो सकता है कि उसकी संपूर्ण शारीरिक क्षमताओं का विकास न हो पाए। उसके बैठने का ढंग, रीढ़ की हड्डी (पीठ) और दृष्टि पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

अध्ययन और घर के कामकाज के लिए बच्चों पर दबाव डालने से उन्हें इन सब कामों में कोई आनंद नहीं आएगा।

खेल के दौरान अन्य बच्चों के साथ मुक्त रूप से अंतःक्रिया न कर पाने के कारण बच्चे के सामाजिक कौषलों का विकास प्रभावित होगा जिसकी वजह से वह षर्मीला और परिस्थितियों से सामना करने से बचना शुरु कर सकता है।

उसे कल्पना शक्ति और सर्जनात्मकता के विकास के अवसर नहीं मिल पाएँगे।

उसे स्वयं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने और निःसंकोच अपनी बात कहने के अवसर नहीं मिल पाएँगे। इससे उसकी कल्पनाषक्ति और सर्जनात्मकता प्रभावित होगी। उसकी दमित भावना एवं ऊर्जा, तनाव और द्वंद्व जो वे खेल के दौरान अभिव्यक्त कर सकते थे वे या तो दमित या अप्रकट ही रह जाएँगे या फिर गुस्सा और आक्रामकता जैसे अवांछनीय रूपों में अभिव्यक्त होंगे। इन सबसे बच्चों के बड़े होने पर सामाजिक और संवेगात्मक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

स्पष्ट है कि बच्चे के बहुमुखी विकास में खेलकूद की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। खेल–अनुभवों का अभाव बच्चे के विकास को अत्यंत गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

अध्यापक होने के नाते, बच्चों को अधिकाधिक खेलकूद के अवसर उपलब्ध कराने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

13) इस भाग के उदाहरण 1 और 2 देखें। आपके विचार में मीना और राजीव पर खेलकूद से वंचित रखने के क्यों संभावित प्रभाव पड़ सकते हैं।

....

....

....

....

4.12 खेलकूदः आनंद का विषय

हमेशा कक्षा में बैठे–बैठे और किताबें पढ़ते–पढ़ते, कई बार बच्चे उब जाते हैं। **आप अपनी कल्पना से षिक्षा प्राप्ति प्रक्रिया बच्चों के लिए अधिक रूचिकर बना सकते हैं। खेल और दूसरे क्रियाकलापों को जब षिक्षा ग्रहण के उद्देष्य से किया जाता है तो सीखना हास्य–विनोद बन जाता है, अर्थात् सीखने की प्रक्रिया अत्यधिक आनंददायक हो जाती है।**

बच्चों को पढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के खेलकूदों का प्रयोग किया जा सकता है। हम एक ऐसे ही खेल का उदाहरण आपकों देंगे। आप अपनी आवष्यकतानुसार ऐसे कितने ही "खेल" तैयार करने पर विचार कर सकते हैं।

इस खेल को जितने भी चाहे, उतने बच्चे खेल सकते हैं। एक नदी को दर्षाते हुए जमीन पर दो रेखाएँ खींच दें। एक बच्चे को मगरमच्छ बना दें। नदी वाली दोनों रेखाओं के बीच मगरमच्छ खड़ा हो जाए। बाकी एक–एक करके मगरमच्छ के पास जाएँगे और उससे कहेंगे कि उन्हें नदी के उस पार निकल जाने दें। मगरमच्छ उनको तभी नदी पार करने देगा जब बच्चे उसके प्रष्न का उत्तर देंगे। मगरमच्छ कोई भी प्रष्न जैसे किसी देष की राजधानी का नाम, किसी संख्या का पहाड़ा, किसी शब्द विशेष का विलोम शब्द आदि पूछ सकता है। प्रष्न किस प्रकार के होने चाहिए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि खेल में शामिल होने वाले बच्चों की आयु क्या है? इसके बाद हर एक बच्चा नदी पार करने के लिए लम्बी कूद लगाए। नदी की चौड़ाई बच्चों की आयु के अनुसार घटाई या बढ़ाइ जा सकती है। जब सभी बच्चे दूसरी ओर कूद जाएँ तो उन्हें पकड़ने के लिए मगरमच्छ उनके पीछे दौड़े और जो भी बच्चा पकड़ा जाए अगली बार उसी को मगरमच्छ बनाया जाए।

खेलों के अतिरिक्त कक्षा में अन्य **क्रियाकलाप** भी बच्चों को पढ़ाने के लिए आयोजित किए जा सकते हैं। पढ़ाए जा रहे पाठ के हिसाब से अध्यापिका विभिन्न क्रियाएँ चुन सकती है। और उनमें आवष्यकतानुसार सुधार या परिवर्तन कर सकती है। उदाहरण के लिए "जल और जलचरों" के बारे में पढ़ाते समय पानी से भरा एक टब या बाल्टी कक्षा में रखी जा सकती है। कैंची और कागज देकर बच्चों से कहा जाए कि ऐसे जानवरों की आकृति काटकर बनाएँ, जिन्हें वे जलचर मानते हैं। इसके बाद कागज की इन आकृतियों को वे टब के पानी में डाल दें। तत्पष्चात् अध्यापिका प्रत्येक जलचर के बारे में विस्तृत चर्चा कर सकती है। परंतु यह चर्चा एकतरफा नहीं होनी चाहिए बल्कि सभी बच्चों को अपने विचार रखने तथा चर्चा में भाग लेने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए। वाद–विवाद, प्रष्नोत्तर आदि क्रियाकलापों का आयोजन भी किया जा सकता है।

बच्चों को पढ़ाने के लिए '**नाट्य–मंचन**' का प्रयोग अत्यंत प्रभावषाली ढंग से किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, इतिहास की कक्षा में ऐतिहासिक दृश्य एवं घटनाओं का बच्चों द्वारा कक्षा में ही अभिनय किया जा सकता है। पढ़ाए जा रहे पाठ की चर्चा से संबद्ध विभिन्न वस्तुओं की गति, कार्य आदि की ध्वनियों का भी बच्चे अभिनय कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि परिवहन पर चर्चा के दौरान वे बस में यात्रा करने, रेलवे प्लेटफार्म, ऊँट पर सवारी करने आदि के दृश्यों का भी अभिनय कर सकते हैं।

वास्तविक रूप से देखी हुई घटनाओं/दृश्यों आदि के माध्यम से बच्चे अधिक अच्छे ढंग से सीख सकते हैं। अध्यापक आस–पास की वस्तुओं, जैसे खेल, मुर्गीफार्म, कारखाना, डेरीफार्म, कुम्हार, बढ़ई आदि दिखाने के लिए बच्चों को ले जा सकते हैं। यदि संभव हो तो उन्हें म्यूजियम, पुस्तकालय आदि भी दिखाए जाने चाहिए। पिकनिक पर जाने से भी बच्चे कुछ सीखते हैं।

4.13 सारांष

यदि बच्चे के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि कोई क्रियाकलाप खेल है अथवा नहीं। कोई काम भी बच्चे के लिए खेल की तरह हो सकता है बषर्तें कि उसे करते समय बच्चे को आनंद आए। बच्चे के बहुमुखी विकास में खेल अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे बच्चे के शारीरिक, भाषिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक और सर्जनात्मक विकास में सहायता मिलती है। आज के परिवेष में बच्चों को प्रायः खेलकूद के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। गृहकार्य पूरा करने का दबाव और पढ़ाई, टेलीविजन के कार्यक्रम, घरेलू कामकाज जैसे कारकों की वजह से बच्चों के खेलने का समय प्रभावित होता है। इन सब बातों को उनके व्यक्तित्व पर दूरगामी कुप्रभाव पड़ता है। वे अपने संपूर्ण शारीरिक कौषलों और सर्जनात्मक शक्तियों का समुचित विकास कर पाने में तथा स्वयं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर पाने में असफल रह सकते हैं। साथ ही बड़े होने पर सामाजिक और संवेगात्मक स्तर पर कुसमायोजित भी कहे जा सकते हैं। कक्षा में अध्यापक का कार्य मूलतः 'चाक और टॉक" (चाक का प्रयोग करते हुए कक्षा में पढ़ाना अर्थात् केवल कक्षा–कक्ष षिक्षण) विधि से किए जाने के कारण बच्चों के लिए पढ़ाई बोझ की तरह बन जाती है और कक्षा में बच्चे बोर होने लगते हैं। खेलकूद और अन्य सहगामी क्रियाकलापों की सहायता से सीखने की क्रिया को मनोरंजक और हास्य–विनोद पूर्ण बनाया जा सकता है। माता–पिता और अध्यापकों पर यह निर्भर करता है कि वे ऐसे तरीकों की तलाष करें जिनसे बच्चे विभिन्न प्रकार के खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित हों तथा जिनसे सीखने की क्रिया और अधिक प्रभावषाली और आनंददायक बन सकें।

4.14 इकाई के अंत में अभ्यास

1) ऐसे खेलों और अन्य क्रियाकलापों के लिए एक सप्ताह के कार्यक्रम की योजना बनाइए जो आपके विचार में बच्चों के बहुमुखी विकास को बढ़ावा देता हो।

2) अभिभावकों को भेजने के लिए परिपत्र तैयार कीजिए, जिसमें संक्षेप में इस बात की जानकारी दी गई हो कि बच्चों के विकास में खेलों की क्या भूमिका है और न खेल पाने की स्थिति में बच्चे के विकास पर क्या संभावित दुशपरिणाम हो सकते हैं।

3) अभिभावकों के लिए एक ऐसा कार्यक्रम आयोजित कीजिए जिसमें यह प्रदर्षित किया जाए कि किस प्रकार खेलकूद एवं अन्य क्रियाकलापों का षिक्षण के लिए उपयोग किया जा सकता है।

4.15 बोध प्रष्नों के उत्तर

1) खेल गतिविधि में "लम्बे समय में परिणाम" मानक शामिल नहीं होता।

2) i) यह एक खेल है क्योंकि 8 वर्षीय बच्चा अपनी स्वतंत्र इच्छा से स्वयं कर रहा है।

   ii) यह खेल गतिविधि नहीं है क्योंकि 20 वर्षीय बच्चा अध्यापक के कहने पर कविता दोहरा रहा है।

3) i) (क)

   ii) (ख)

4) श्रीमती शर्मा की चिंता उचित नहीं है। क्योंकि उमा दो साल की है, वह अन्य बच्चों से अलग स्वतंत्र खेलना चाहती है। इस आयु में बच्चे ज्यादा अंतःक्रिया पसंद नहीं करते।

5) i) एकल खेल

ii) सहयोगात्मक खेल

iii) समानान्तर खेल

6) a) शारीरिक एवं गामक विकास

b) भाषा विकास

c) संज्ञानात्मक विकास

d) सामाजिक विकास

e) सांवेगिक विकास

f) कल्पनाषक्ति एवं सृजनात्मकता का विकास

7) शारीरिक विकास

- रस्सी कूदना,
- साइकिल चलाना

गामक विकास

- दौड़ना
- कूदना
- पेड़ पर चढ़ना

संज्ञानात्मक विकास

- लंगड़ी टाँग
- शब्द पहेली
- संगीत बजाना

सामाजिक – संवेगात्मक विकास

- कलात्मक अभिनय
- रोल प्ले
- कहानी लिखना

कल्पनाषक्ति एवं सृजनात्मकता का विकास

- अभिनय
- क्ले–माडलिंग
- चित्रकारी

8) i) ख

ii) क

iii) क

iv) ग

9) iv, v

10) i, ii, iv,vi

11) एक रोल प्ले कराया जा सकता है।

12) खेल

- स्वस्थ शारीरिक वृद्धि व विकास को प्रोत्साहित करता है।
- हड्डियों और माँसपेषियों में मजबूती लाते हैं।
- संतुलन बनाते हैं और कौषलों में विकास होता है।
- आराम में मदद करते हैं।
- मित्र बनाने में अवसर देते हैं।
- आत्म–संतुष्टि बढ़ाते हैं।
- लचीलापन लाते हैं।
- शारीरिक आकार ठीक करते हैं।

एक माता–पिता के रूप में

- बच्चों को आंगन में खेलने को प्रोत्साहित करें।
- उनके साथ पार्क में, मोटर साइकिल पर घूमने जाएँ।
- बच्वें का टी.वी. देखने, कम्पयूटर के गेम खेलने एवं इंटरनेट प्रयोग का समय निष्चित करें।
- उनके साथ स्वयं कुछ खेल खेलें।

13) अपने अनुभव के आधार पर लिखें।

4.16 पठनीय सामग्री

डनलप, एल.एल. (1937), *प्लेटाइम एट होमः एन इंट्रोडक्सन टू अर्ली चाइल्डहुड स्पेषल,* वेबसाइटः http://www.education.com/reference/article/play-time-home

रिच, डायने, (दिसम्बर 2005), इम्पॉरटेंस ऑफ प्ले, नर्सरी एजुकेषन, वेबसाइटः http:// www.rich learning opportunites.co.uk

जेनकिन्सन, एस. (2001), *दी जीनियस ऑफ प्लेः सेलीब्रेटिंग द स्पिरिट ऑफ चाइल्डहुड,* रट्राउड हाउथ्रान प्रैस, पृ. 129